चार मंगल

Presentation created by-
श्रीमति सारिका छाबड़ा

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

लोक में चार मंगल हैं।

अरहंत भगवान मंगल हैं,

सिद्ध भगवान मंगल हैं,

साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) मंगल हैं तथा

केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म मंगल है।

मंगल

मं+गल

- = मम् अर्थात् <u>मोह/मिथ्यात्व/पापों</u> को
- = अर्थात् <u>गलावे</u>

मंग+ल

- = मंग अर्थात् <u>सुख</u>
- =लाति अर्थात् <u>लावे</u>

मंगल

जो मोह-राग-द्वेषरूपी पापों को गलावे और

सच्चा सुख उत्पन्न करे, उसे मंगल कहते हैं।

अरहंतादिक स्वयं मंगलमय हैं और

उनमें भक्तिभाव होने से परम मंगल होता है।

आचार्य, उपाध्याय को साधु पद में ही क्यों गर्भित किया है?

1. • ये सभी साधु तो होते ही हैं
2. • वीतरागता की पूर्णता साधु पद से ही होती है
3. • साधु हुये बिना मोक्ष नहीं प्राप्त किया जा सकता
4. • आचार्य, उपाध्याय और साधु तीनों ही आत्मलीनतारूप साधु धर्म के धारक हैं

‘अरहंता’, ‘सिद्धा’ और ‘साहू’ ये तीनों
बहुवचन (Plural) हैं
तथा ‘धम्मो’ शब्द एकवचन (Singular) है

चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

लोक में चार उत्तम हैं।

अरहंत भगवान उत्तम हैं,

सिद्ध भगवान उत्तम हैं,

साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) उत्तम हैं तथा

केवली भगवान द्वारा बताया हुआ वीतराग धर्म उत्तम है।

उत्तम

लोक में जो सबसे महान हो, उसे उत्तम कहते हैं।

लोक में ये चारों सबसे महान हैं, अतः उत्तम हैं।

ये चारों उत्तम कैसे हैं?

इनकी उत्तमता पर से निरपेक्ष है

किसी को स्वयं प्रभावित नहीं करने के कारण

किसी से किसी काल में प्रभावित नहीं होने के कारण

अपने आत्म-वैभव से सर्वाधिक शक्तिशाली होने के कारण

क्या ये उत्तम हैं ?

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

मैं चारों की शरण में जाता हूँ।

अरहंत भगवान की शरण में जाता हूँ,

सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ,

साधुओं (आचार्य, उपाध्याय, और साधु) की शरण में जाता हूँ और

केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतराग धर्म की शरण में जाता हूँ।

शरण

शरण सहारे को कहते हैं।

पंच-परमेष्ठी द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंचपरमेष्ठी की शरण है।

शरण की क्या आवश्यकता है?

शरण तो पराधीनता का प्रतीक है??

इनकी शरण से शाश्वत
स्वाधीन बनते हैं

क्या ये शरण हैं?

जो व्यक्ति पंच-परमेष्ठी की शरण लेता है

उसका कल्याण होता है

अर्थात् दुःख (भव-भ्रमण) मिट जाता है।

इनकी शरण लेनी चाहिए क्या ?

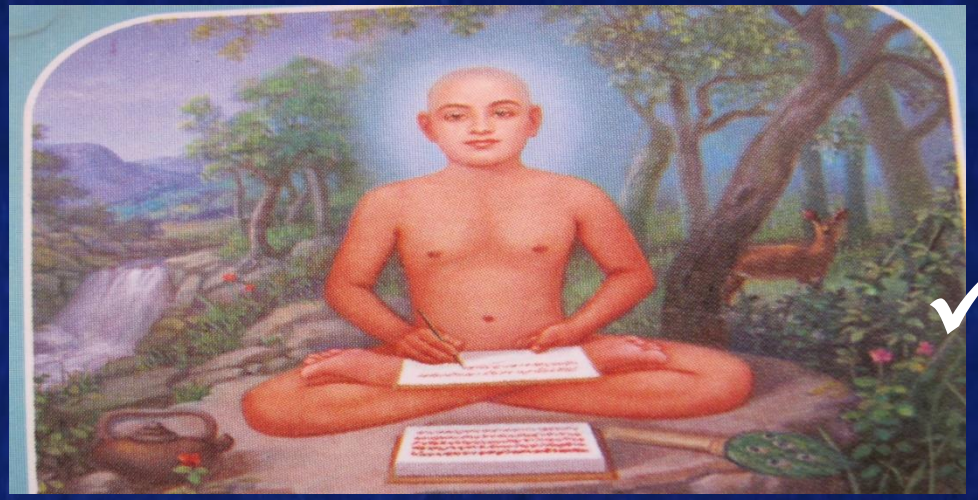

Presentation created by :Smt. Sarika Vikas Chhabra

For comments / feedback / suggestions,
please contact:

sarikam.j@gmail.com
☎: 9406682889

For updates, check www.jainkosh.org